मद्यपान का समायोजन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. मोहन चन्द्र
मनोविज्ञान विभाग
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर चम्पावत

प्रस्तुत शोध पत्र में मद्यपान का समायोजन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य मद्यपान करने वाले पुरूषों एवं मद्यपान नही करने वाले पुरूषों व उनकी पत्नियों के समायोजन स्तर पर मद्यपान के प्रभाव को स्पष्ट करना। शोध प्रयोजन हेतु 20 मद्यपी पुरूष व 20 गैर–मद्यपी पुरूष व 20 मद्यपी पुरूषों की पत्नियां व 20 गैर–मद्यपी पुरूषों की पत्नियों का चयन देव भूमि उत्तराखण्ड के हल्द्वानी शहर में स्थिति नशा मुक्ति केन्द्रों व शहर के गैर–मद्यपी पुरूषों व उनकी पत्नियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन के अन्तर्गत स्वेच्छा अनुसार प्रतिदर्श से किया गया। अध्ययन में पाया गया कि मद्यपान का मद्यपी व गैर–मद्यपी पुरूषों एवं उनकी पत्नियों के समायोजन स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कूटशब्द : *मद्यपान, मद्यपी, गैर–मद्यपी, समायोजन*

1.प्रस्तावना

मद्यपान का अत्यधिक उपयोग किसी भी व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक स्वास्थ के साथ–साथ सामाजिक व आर्थिक रूप से प्रभावित करते है। विश्व स्वास्थ संगठन की 2018 की रिर्पोट के अनुसार 2016 में मदिरा के हानिकारक प्रभाव के कारण दुनिया भर में 3 मिलियन मौते हुई जिसमें अधिकतर संख्या पुरूशों की थी।

मद्यपान पर निर्भर व्यक्ति में मुख्य लक्षण देखने को मिलते है–

(1) ऐसे व्यक्ति जो मदिरा का सेवन अधिक करते है ऐसे व्यक्तियों का अधिकांश समय और शक्ति इस कार्य में सोचने में नष्ट हो जाती है कि वे मदिरा का सेवन कब, कहॉ और कैसे प्राप्त करेगे।

(2) ऐसे व्यक्ति अपने जीवन के महत्वपूर्ण कार्य को भी मदिरा सेवन करके ही करते है।

(3) मद्यपान के उपरान्त ऐसे व्यक्तियों में अचेतनता सी उत्पन्न हो जाती है एवं जिसका बाद में इन्हे किसी प्रकार का ज्ञान नही रहता है।

2.समायोजन

समायोजन एक सार्वभौमिक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति सदैव सामान्य से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है।

स्मिथ के अनुसार – समायोजन यथार्थ पर आधिारित होता है तथा संतोषप्रद होता है।

कुप्पूस्वामी के अनुसार – सामयोजन के फलस्वरूप प्रसन्नता होती है क्योंकि इसमें संवेगात्मक द्वन्द्व और तनाव दूर हो जाता है।

कोल मैन (1969) समायोजन में व्यक्ति अपने वातावरण में विद्यमान प्रतिबल को कम करता है तथा अपनी मनोवैज्ञानिक आवष्यकताओं को पूरा करता है। इन दोनों कार्यों में सामंजस्य होने पर समायोजन होता है।

आइजनेक (1972) के अनुसार यह वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवष्यकताए तथा दूसरी ओर वातावरण के अधिकारों में पूर्ण सन्तुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दो अवस्थाओं में सामंजस्य प्राप्त होता है।

गेट्स (1965) के अनुसार जिसमें समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के मध्य सन्तुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

समायोजन के प्रकार – समायोजन के प्रमुख चार प्रकार है–

(1) प्रतिस्थापित समायोजन – जब व्यक्ति द्वारा किए जा रहे कार्यों में सफलता प्राप्त नही हो पा रही हो तो वह संबंधित लक्ष्य या कार्य का प्रतिस्थापना करके स्वंय को समायोजित कर सकता है।

(2) रचनात्मक समायोजन – जब भी कोई व्यक्ति किसी समस्या का समाधान उचित या रचनात्मक रूप से करता है तो उसे रचनात्मक समायोजन कहा जाता है। जैसे विशेष लक्ष्य प्राप्ति में वृद्वि करना। समस्या होने पर विभिन्न दृश्टिकोणों से विचार करना व अन्य सभी लोगों से उचित सलाह लेना।

(3) प्रयक्ष बचाव – समस्या के समाधान के प्रयास में व्यक्ति असफल होने पर प्रायः लक्ष्य प्राप्त न होने की स्थिति में क्रोधित होकर आक्रमण करना, उदासीन हाक जाना या प्रतिगमन व्यवहार करना।

(4) मानसिक विरचनाऐ – यदि व्यक्ति समायोजन स्थापित करने वाली समस्याओं से बचने के लिए मानसिक विरचनाओं का उपयोग कर सकता है। जैसे इच्छाओं को दमित करना, क्षतिपूर्ति उदासीकरण एवं प्रक्षेपण इत्यादि द्वारा तनाव एवं कुण्ठा के प्रभाव को मानसिक स्तर पर कम किया जा सकता है।

3.समायोजन के क्षेत्र

(1) गृह समायोजन – प्रत्येक व्यक्ति का समायोजन शिक्षा गृह से ही प्रारंभ होती है। जितना श्रेष्ठ वातावरण गृह का होगा संभवता व्यक्ति उतना ही श्रेष्ठ बुद्विवाला होगा। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आदर्श व्यक्ति उसके माता–पिता होते है एवं माता–पिता का व्यवहार, आचरण जितना समायोजित होगा व्यक्ति का व्यवहार व आचरण भी हर परिस्थिति में उतना ही समायोजित होगा।

(2) स्वास्थ समायोजन – स्वास्थ प्रत्येक व्यक्ति के शरीरिक – मानसिक एवं व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाता हैं। स्वास्थ संतुष्टि एवं समायोजन का प्रमुख स्त्रोत है। एक अस्वस्थ व्यक्ति हमेशा अपनी निजी समस्याओं के कारण स्वयं को समायोजित नही कर पाते है एवं उनका व्यवहार अधिकतर कुसमायोजित रहता है। शरीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति का समायोजन सदैव उत्तम रहता है।

(3) सामाजिक समायोजन – सामाजिक समायोजन के अन्तर्गत कहा जा सकता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है एवं एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास अपने सामाजिक वातावरण में विकसित करता है। व्यक्ति अपने सामाजिक नियमों के अनुसार अपने आप को सदैव ढालने की कोशिश करता है। व्यक्ति जिस समाज में रहता रहता है व अपने सामाजिक आदर्शों व मूल्यों को प्राप्त करता है , एवं स्वयं को सामाजिक रूप से सममायोजित करता है। समायोजन व्यक्ति की सामाजिक परिपक्वता से प्रभावित होता है। परिपक्वता सामाजिक संबंधों से तात्पर्य परिवार के साथ अच्छे संबंध, पड़ोसी मित्रो , शिक्षक व अन्य सदस्यों के साथ उचित संबंध स्थापित करना।

(4) संवेगात्मक समायोजन – एक व्यक्ति भावनात्मक रूप से समायोजित होता है यदि वह भावनाओं को उचित रूप से व्यक्त करता है तो वह भावनात्मक रूप स्थिर हो सकता है। भावनात्मक रूप से स्थिर व्यक्ति उचित रूप से समायोजित एवं कुसामायोजित रहते है। स्वयं को भावनाओं के अनुरूप समायोजित कर लेना भावनात्मक समायोजन कहलाता है। मानव मन सदैव विभिन्न प्रकार के विचारों सं घिरा रहता है अतः उन सभी को संतुलित होने के लिए समायोजन की आवश्यकता होती है।

(5) शैक्षिक समायोजन – यदि व्यक्ति का शैक्षणिक स्तर अच्छा है तो वह निश्चित ही उच्च बुद्वि वाला होगा। अच्छी बुद्वि वाले व्यक्ति का शैक्षिक समायोजन उत्तम होता है। व्यक्ति का शैक्षिक समायोजन उत्तम होता है। व्यक्ति शैक्षिक वातावरण में स्वयं को समायोजित कर लेता है लेकिन वातावरण तथा अच्छे शैक्षिक परिवेश से मन्द्व बुद्वि व्यक्ति में भी चमक व निखार लाया जा सकता है।

4.समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक

(1) आकांक्षा स्तर – किसी भी व्यक्ति से उसके माता–पिता, शिक्षक व मित्रों की जो उम्मीदे होती है एवं उम्मीदो को पूरा न कर पाने से व्यक्ति का समायोजन स्तर प्रभावित होने लगता है।

(2) सामाजिक–आर्थिक स्तर – प्रत्येक व्यक्ति के समायोजन स्तर को बेहतर बनाने के लिए उसका सामाजिक–आर्थिक स्तर भी बेहतर होना चाहिए, यदि व्यक्ति का सामाजिक–आर्थिक स्तर कमजोर है तो उससे उसका समायोजन स्तर प्रभावित होने लगता है एवं व्यक्ति का व्यवहार कुप्रभावित होने लगता है।

(3) संरक्षको की प्रतिष्ठा – प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके माता–पिता, अभिभावकों की प्रतिष्ठा व सम्मान प्रमुख होता है। जिस कारण व्यक्ति समाज के हिस्सो में उचित –अनुचित का निर्णय नही ले पाता। समाज के कई वर्गों व जाति के व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित नही कर पाता।

(4) शहरी एवं ग्रामीण जीवन – प्रत्येक व्यक्ति के शहरी व ग्रामीण जीवन में विभिन्न प्रकार की विषमताऐ होती है जैसे शहरी जीवन ग्रामीण जीवन को एवं ग्रामीण जीवन शहरी जीवन को प्रभावित करता है। जिससे व्यक्ति का समायोजन स्तर भी प्रभावित होने लगता है।

(5) चिन्ता – व्यक्ति सर्वप्रथम जिस तनावपूर्ण परिस्थिति में घिर कर प्रतिक्रिया देता है वह सांवेगिक अनुक्रिया होती है जिसे चिन्ता कहते है। चिन्ता एक प्रकार की सांवेगिक अवस्था है जिससे व्यक्ति डर, आशंका जैसी समस्या को प्रधानता देता है। चिन्ता मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है।

(क) सामान्य चिन्ता – सामान्य चिन्ता का स्वरूप सामंजस्य पूर्ण होता है और प्रकार की चिन्ता, तनाव उत्पन्न करने को सहायता करता है। स्नायुविकृत चिन्ता में व्यक्ति को सहायता करता है। स्नायुविकृत चिन्ता में व्यक्ति को तनाव उत्पन्न करने संबंधी परिस्थिति से उतना अधिक ग्रस्त हो जाता है जिसके कारण परिस्थिति विशेष से वह समायोजित नही कर पाता ।

(6) कुण्ठा – किसी कार्य को करने में यदि व्यक्ति बार बार विफल होता है जिससे वह धीरे – धीरे कुण्ठा का शिकार होने लगता है। इस तरह की कुण्ठा लक्ष्य प्राप्ती में बाधा या किसी अन्य व्यक्ति के बाधा उत्पन्न करने से उत्पन्न होती है। इनमें विभेद व पूर्वाग्रह, कार्य सन्तुष्टि मे अवरोध, प्रियजन की मृत्यु आदि पर्यावरणी कारक प्रमुख है। जो व्यक्ति में कुण्ठा उत्पन्न होने देते है। इसी प्रकार दिव्यांगपन की कमी आदि आंतरिक कारक की प्रधानता है।

5.समायोजन की विशेषताएँ

समायोजन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका विश्लेषण कर निम्नलिखित विशेषताऐ प्राप्त होती है।

(1) समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है – व्यक्ति जीवन काल के महत्वपूर्ण पक्ष पर ही समायोजन कर प्रयोग नही करता वह समायोजन का प्रयोग जीवन काल के प्रत्येक क्षण में करता है। किसी भी कार्य में व्यक्ति को अनेक समस्याऐ उत्पन्न होती है एवं वह उन्हें दूर की ही अपनी आवश्यकता पूर्ण एवं स्वयं को समायोजित कर पाता है। मानव जीवन में एक आवश्यकता पूर्ण होते ही दूसरी आवश्यकता आरम्भ हो जाती है इस प्रकार यह आजीवन चलती रहती है।

(2) प्रेरणा – समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति में उपस्थित प्रेरणा व आवश्यकता से उत्पन्न होती है।

(3) समायोजन व्यक्ति से संबंधित है – व्यक्तियों में व्यक्तिगत भिन्न–भिन्न विषमताए पाई जाती है अतः एक ही परिवेश में व्यक्ति भिन्न–भिन्न रूप से समायोजित भी होता है। जब वातावरणीय आवश्यकताओं की संतुष्टि में बाधक बनते है तो व्यक्ति बाह्य व आन्तरिक मांगों के साथ–साथ कुण्ठित हो जाता है जिससे वह अपने जीवन मूल्यों, सामाजिक मानको, अभिवृत्तियों, पूर्वाग्रहों को आधार मान कर समायोजित होने का प्रयास करता है।

6.शोध संबंधी साहित्य

चौधरी, सलदान्हा, सैनी, दीवान, सिंह एवं पाठक (2018) द्वारा किये गये अध्ययन में मद्यापन से ग्रसित व्यक्तियों से 6.82 प्रतिशत व्यक्तित्व विकार, 10.23 प्रतिशत समायोजन विकृति से ग्रसित पाये गये।

मोहघेघी, अमीरी, मौसव व सफिखलोउस (2015) द्वारा मदिरा पान से ग्रसित व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ व संवेगात्मक बुद्विमत्ता घटक विषय पर शोध अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम के आधार पर मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति मद्यपान का सेवन करने वालों की तुलना अधिक आशावादी पाए गये।

ठैनुआ बीरपाल सिंह,श्रीवास्तव दीपमाला एवं धाकड़ पवन सिहं(2018) द्वारा किये गये शोध जिसका शिर्षक श्राजस्थान राज्य के भारतपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणामरू एक समाजशास्त्रीय अध्ययन का मुख्य उद्वेश्य मद्यपान के वैयक्तिक कारकों का अध्ययन करना जिसके लिये उपकल्पना यह बनाई गई कि अधिकांश मद्यपान विघटित व्यक्तित्व वाले व्यक्ति करते है। शोध हेतु 360 पुरूषों का चयन स्नो वॉल विधि के माध्यम से किया गया। अध्ययन परिणामों के आधार पर यह निषर्क निकाला गया कि मदिरापान से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक समायोजन आदि प्रभावित होते है।

श्रीवास्तव आनंद एवं रंजना जैन (2018) द्वारा किये गये अध्ययन का मुख्य उद्वेश्य नशा करने वाले तथा न करने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों के समायोजन का अध्ययन करना था। शोध अध्ययन हेतु बनाई गई उपकल्पना यह थी कि नशा करने वाले तथा नशा न करने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही होता है। शोध हेतु 100 किशोरो का चयन किया गया जिसमें 50 नशा करने वाले एवं 50 नशा न करने वाले किशोर थे। अध्ययन परिणाम से ज्ञात हुआ कि नशा करने वाले तथा नही करने वाले निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशारो के समायोजन के मूल प्राप्तांको के गणना के आधार पर कहा जा सकता है कि नशा करने वाले एवं नही करने वाले सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। मध्यमानों का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि नशा करने वाले सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरों के समायोजन का स्तर नशा नहीं करने वाले किशोरों से निम्न था।

सिहं अरिमर्दन (2018) ने मदात्ययियों की व्यक्तिगत और सामाजिक विशिष्टताओं का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में 200 व्यक्तियों का चयन आयु वर्ग के अनुसार किया गया। प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि विभिन्न आयु वर्ग में व्यक्तियों की शैक्षिक, आर्थिक, पारिवारिक, वैवाहिक व सामाजिक सामंजस्य पर प्रभाव पड़ता है। नही किशोरों का होता है।

7.शोध पत्र का उद्देश्य

1) मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
2) मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।

उपकल्पना

1) मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तरं होगा।
2) मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होगा।

अध्ययन के क्षेत्र – शोध अध्ययन में मद्यव्यसन का समायोजन स्तर पर प्रभाव जानने के लिए नैनीताल जिले में स्थिति नशा मुक्ति कन्द्रों में प्रवास कर रहे पुरूषों का चयन किया गया एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों व उनकी पत्नियों का चयन किया गया।

संमको का संकलन – प्रस्तुत शोध में प्रस्तावित परिकल्पना की जांच करने तथा समकों के सग्रहण हेतु निरीक्षण तथा निरीक्षण विधि, साक्षात्कार विधि एवं अनुसूची तथा प्रश्नावली विधि का उपयोग किया गया।

प्रतिदर्श – प्रस्तुत शोध में मद्यव्यसन का समायोजन स्तर पर प्रभाव जानने हेतु नैनीताल जिले के हल्द्वानी में स्थिति विभिन्न नशा मुक्ति केन्द्रों में भर्ती मरीजों एवं सामान्य व्यक्तियों एवं उनकी पत्नियों को अध्ययन की इकाई बनाया गया। अध्ययन हेतु 20 मद्यव्यसनी पुरूष एवं 20 मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों व 20 गैर– मद्यव्यसनी पुरूष एवं 20 गैर– मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों का चयन असम्भाव्य प्रतिचयन के अन्तर्गत स्वेच्छा अनुसार प्रतिदर्श के माध्यम से किया गया।

उपकरण – समायोजन मापनी का निर्माण डॉ0 आर0 सी0 देवा द्वारा किया गया है। समायोजन मापनी का यह हिन्दी रूपान्तर है। इस प्रश्नावली में 100 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। प्रत्यके प्रश्न के दो विकल्प दिये गये है जो व्यक्ति के समायोजन स्तर का मूल्यांकन करते है। सम्पूर्ण मापनी को दो विमाओं में वर्गीकृत किया गया है। जैसे – संवेगात्मक समायोजन व सामाजिक परिपक्वता से संबंधित है।

8.आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण करने हेतु टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

तालिका : मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यनी पुरूषों के समायोजन स्तर पर प्रभाव ।

श्रेणी	आँकड़ों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश पर	टी–अनुपात
मद्यव्यसनी पुरूष	20	72.15	8.85	18	0.6238
गैर–मद्यव्यनी पुरूष	20	88.6	8.36	18	

स्त्रोतः प्राथमिक श्रोतो पर आधारित।

उपयुक्त तालिका को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

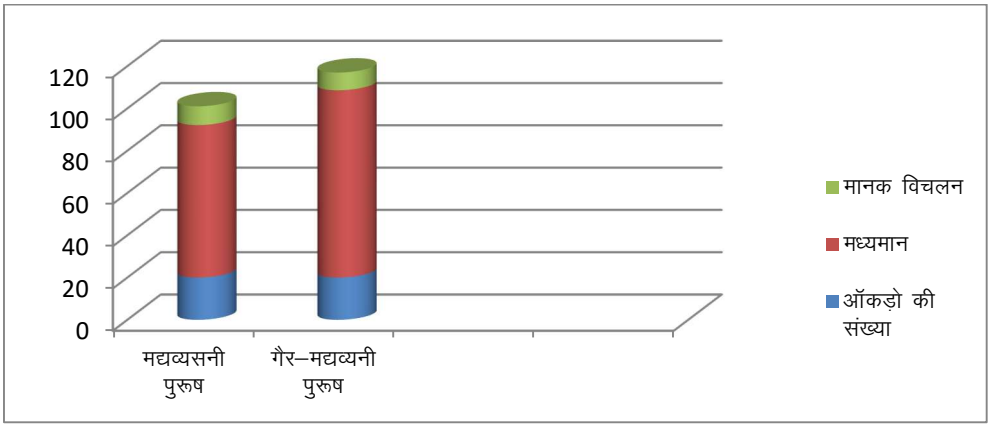

प्रस्तुत अध्ययन में मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर पर प्रभाव के प्राप्तांक में टी–परीक्षण का मान 0.6238 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश पद 0.05 प्रतिशत के स्तर पर 2.10 मान प्राप्त हुआ तथा 0.01 प्रतिशत के स्तर पर 2.88 का मान हुआ। अतः उपकल्पना सत्य सिद्व हुई। इस प्रकार शोध पत्र में बनायी गई प्रथम उपकल्पना मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होगा को अस्वीकृत सिद्व होती है। क्योकि मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर देखा गया।

तालिका : मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर पर प्रभाव।

श्रेणी	आँकड़ों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश पर	टी–अनुपात
मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नी	20	71.95	7.3842	18	0.2113
गैर–मद्यव्यनी पुरूषों की पत्नी	20	89.65	7.3842	18	

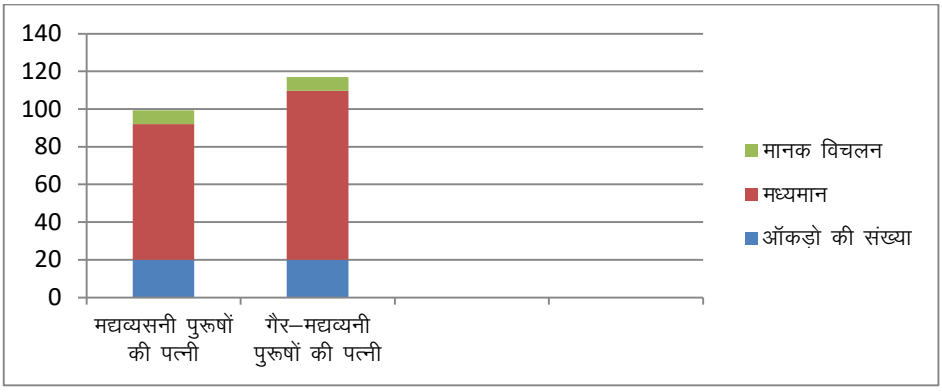

प्रस्तुत अध्ययन में मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर पर प्रभाव के प्राप्तांक में टी–परीक्षण का मान 0.2113 प्राप्त स्वतंत्रता के अंश पद 0.05 प्रतिशत के स्तर पर 2.10 मान प्राप्त हुआ तथा 0.01

प्रतिशत के स्तर पर 2.88 का मान हुआ। जिसमें टी का मान 0.05 प्रतिशत पर सार्थक है एवं 0.01 प्रतिशत स्तर पर टी का मान सार्थक नही है। इस लिये इस शोध में बनायी गयी प्रथम उपकल्पना को 0.05 व 0.01 प्रतिशत के स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार शोध पत्र में बनायी गई प्रथम उपकल्पना मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होगा। को अस्वीकृत सिद्व होती है। क्योकि मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर देखा गया।

9.शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्वेश्य मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पति एवं उनकी पत्नियों के समायोजन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन ज्ञात करना था। शोध हेतु निर्मित प्रथम उपकल्पना ''मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होगा'' थी। प्राप्त आँकडों के परिणामानुसार मद्यव्यसनी पुरूषों एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर पाया गया जिसके स्वरूप शोध में निर्मित प्रथम उपकल्पना सत्य सिद्व होती है। अध्ययन हेतु ''मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होगा'' था। प्राप्त आँकड़ो के परिणामानुसार मद्यव्यसनी पुरूषों एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर पाया गया जिसके स्वरूप शोध में निर्मित द्वितीय उपकल्पना सत्य सिद्व होती है। शोध निष्कर्ष चौधरी, सलदान्हा, सैनी, दीवान, सिंह एवं पाठक (2018) एवं नायक विजय एवं सिहं अरिमर्दन (2018) के शोध परिणाम के सामान ही प्राप्त हुए है। शोध परिणाम समान होने का मुख्य कारण मद्यपान है। मद्यपान के कारण ही दोनों वर्गों में नही पाया गया। मद्यपान करने के कारण ही मद्यपी पुरूष अपने वैवाहिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में सफल नही हो पा रहे जिसका प्रभाव उनकी पत्नी पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, इसके विपरित गैर मद्यपी–व्यक्ति का वैवाहिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन सफल व बेहतर है जिसका प्रभाव उनकी पत्नी पर भी देखा जा सकता है।

10.सुझाव

शोध के माध्यम से समाज को समायोजन स्तर के भिन्न भिन्न क्षेत्रों के महत्व को समझाने के साथ–साथ अनावश्यक मदिरा पान से टूटते हुए वैवाहिक, पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों के बारे में जागरूक करना है। समायोजन स्तर के कुप्रभावित होने से व्यक्ति के व्यक्तिगत,पारिवारिक,सामाजिक आर्थिक स्तर तक प्रभावित होते है। अत्यधिक मद्यपान का प्रभाव वैवाहिक, पारिवारिक व सामाजिक संबंधो पर देखा जा सकता है। ऐसे परिवार जहाँ के पुरूष अधिक व्यसन करते है उस परिवार में अधिकतर तनावपूर्ण वातावरण बना रहता है। जबकि ऐसे पुरूष जो मद्यपान का उपयोग कम करते है या नही करते है उनका समायोजन स्तर मद्यपी व्यक्ति के मुकाबले कम प्रभावित होते है।

सन्दर्भ

1. श्रीवास्तव, आनंद एवं रंजना जैन (2018). ऐन्गजाइटी एण्ड डिपरेशन इन स्पाउस ऑफ मेल्स डाइग्नोस्ड विथ अल्कोहल डिपेन्डेन्सरू इन्टरनेश्नल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एनालिटिकल रिव्यू, ई– आईएसएसएनरू 2348–2348 एक्स, आई एसएसएन (प्रिन्ट), 2349–5138, वोल्यूम 5
2. चौधरी, सलदान्हा, सैनी, दीवान, सिंह एवं पाठक (2018). कमोटविड साइकेट्रीक डिसओर्डर इन अल्कोहल डिपेनडेन्सीः जर्नल ऑफ साइकेट्री ओपन एक्सन जर्नल, वोल्यूम 21 (3) पृष्ठ संख्या, एचटीटीपीएलः/ /डोओआई.10.4172/23785756
3. मोहघेघी, अमीरी, मौसव व सफिखलोउस (2015). इमोश्नल इन्टेलीजेन्स कम्पोनेन्ट्स इन अल्कोहल डिपेन्डेन्ट एण्ड मेन्टली हेल्थी इन्डीविजवलरू द् साइन्सटिफक वर्ल्ड जर्नल, 2015रू841,039
4. सिंह, अरिमर्दन (2018), मदात्ययियों की व्यक्तिगत और सामसजिक विशिष्टताएँ, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एनालिटिकल रिव्यू, पृष्ठ संख्या 7–12, ई–आईएसएसएनरू 2455–2127 एक्स, आई एसएसएन (प्रिन्ट)रू 2348–0084

5. ठैनुआ, बीरपाल सिंह व इत्यादि (2018). राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणामः एक समाजशास्त्रीय अध्ययनरू श्रंखला, एक शोध परक विचारिक पत्रिका, वोल्यूम 6(8) ई– आईएसएसएनरू 2321–290,एक्स, आई एसएसएन (प्रिन्ट): 2349–980
6. सिंह, अरूण कुमार (2013). आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, सातवाँ संस्करण–प्रकाशन–जे.पी.जैन के द्वारा मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक प्रा. लि., 49 यू. ए., बंगलो रोड,जवाहर नगर, दिल्ली (मद्यपानता पेज नं. 266–281).
7. सिंह, अरूण कुमार, (2013). शिक्षा मनोविज्ञान, सातवाँ संस्करण प्रकाशन–जे.पी.जैन के द्वारा मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक प्रा. लि., 49 यू. ए., बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली (कुसमायोजन और मानसिक सवास्थ 697–707)
8. शर्मा, गोविन्द प्रसाद (2014). मानसिक स्वास्थ एवं मनोरोग नर्सिंग, संस्करण दृ धनतेरस चिन्मय जैन, जैन पब्लिकेशन्स जयपुर (मानसिक स्वास्थ पेज नं. 1–11)
9. हार्टर, एसएल, टेलर टीएल (2000). पैरन्टल अल्कोहोल्जिम, चाइल्ड एब्यूस एण्ड़ एडजेस्टमेन्ट स्बस्ट एब्यूस 31–44 रिब्यू, प्यूब मेड पीएमआईडीः10756512
10. श्रीवास्तव, डॉ. डी. एन. वर्मा, डॉ. प्रीति वर्मा (1996). आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान(समायोजन 671–673),चौदहवाँ संस्करण– प्रकाशन – विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा